खेलों में महिलाओं के समक्ष मुद्दे

प्रलिम्सि के लिये:

लिंगवाद, लैंगिक असमानता, महिला सुरक्षा।

मेन्स के लिये:

खेलों में महिलाओं द्वारा सामना किये जाने वाले मुद्दे।

चर्चा में क्यों?

हाल ही में कुछ खिलाड़ियों ने **भारतीय कुश्ती संघ (WFI)** के अध्यक्ष बृजभूषण शरण सिंह पर यौन उत्पीड़न के आरोप लगाए थे।

- इस मामले में खेल मंत्रालय ने 72 घंटे के भीतर WFI से स्पष्टीकरण मांगा है, यदि WFI जवाब देने में विफल रहता है, तो मंत्रालय **राष्ट्रीय खेल विकास संहिता, 2011** के प्रावधानों के अनुसार संघ के खिलाफ कार्रवाई शुरू करेगा।

ऐसे आरोपों का परिदृश्य:

- सूचना का अधिकार (RTI) आँकड़ों के अनुसार, वर्ष 2010 से 2020 के बीच भारतीय खेल प्राधिकरण (SAI) को यौन उत्पीड़न की 45 शिकायतें मिलीं जिनमें से **29** शिकायतें **कोचों के खिलाफ** थीं।
- इनमें से कई रिपोर्ट किये गए मामलों में अभियुक्तों को सामान्य दंड के साथ उदारतापूर्वक छोड़ दिया गया था, जिसमें वेतन या पेंशन में मामूली कटौती तथा स्थानांतरण शामिल था।
- कुछ मामलों में अभी तक कोई निर्णय नहीं हुआ है तथा कई वर्षों से चल रहे हैं और इनका कोई समाधान नहीं दिख रहा है।
    - **खेल में दुर्व्यवहार का मामला वर्ष 2021 में जर्मनी में एक चुनावी मुद्दा था।** संघीय संसद की खेल समिति ने मई 2021 में खेलों में भावनात्मक, शारीरिक और यौन हिंसा पर एक सार्वजनिक सुनवाई की मेज़बानी की।
- अब समय आ गया है कि **भारत इस मुद्दे पर चर्चा करे** तथा जंतर- मंतर पर खिलाड़ियों के विरोध प्रदर्शन का इंतज़ार न करे।
- 21वीं सदी में रहते हुए जहाँ हमने अपनी बोली लगाने के लिये रोबोट नियंत्रण तकनीक विकसित की है, अभी भी एक पहलू है जहाँ हम प्रगति की बात करते समय खुद को पिछड़ा हुआ पाते हैं- **लिंग समानता।**

महिला खिलाड़ियों के समक्ष मुद्दे:

- **वित्तपोषण और बजट:**
    - पुरुष खिलाड़ियों की तुलना में महिला खिलाड़ियों को कम धन मिल पाता है, जिससे उनके लिये प्रतिस्पर्द्धा करना एवं लगातार कार्यक्रम चलाना मुश्किल हो जाता है।
- **उत्प्लावक लिंगवाद (Buoyant Sexism):**
    - महिलाओं को रोज़मर्रा के आधार पर लिंगवाद के कई मुद्दों का सामना करना पड़ता है, चाहे वह घर के बाहर कार्यस्थल हो या घर। उनके पहनावे, उनकी बातचीत व व्यवहार की निगरानी की जाती है और इन्हीं आधारों पर न्याय किया जाता है।
- **लैंगिक असमानता:**
    - अपने सामाजिक अधिकारों की वकालत हेतु महिलाओं के प्रयासों के बावजूद उन्हें अभी भी पेशेवर मोर्चे पर विशेष रूप से खेल जगत में अपने पुरुष समकक्षों के समान सम्मान या मान्यता प्राप्त नहीं होती है।
- **पहुँच की कमी और महँगा:**
    - स्कूलों में शारीरिक शिक्षा की कमी तथा हाईस्कूल एवं कॉलेज दोनों में खेल के सीमित अवसरों का अर्थ है कि लड़कियों को खेल के लिये कहीं और देखना पड़ता है- जो उपलब्ध नहीं हैं या अधिक महँगे हैं।
    - अक्सर **घर के निकट पर्याप्त खेल सुविधाओं की कमी** के कारण लड़कियों के लिये खेलों में भाग लेना अत्यंत कठिन हो जाता है।
- **सुरक्षा और परिवहन मुद्दे:**

- खेलों में सम्मलिति होने के लयि स्थान के साथ-साथ सुवधिाओं की आवश्यकता होती है, जो कई लड़कयिों, वशिष रूप से घने शहरी क्षेत्रों में रहने वाली लड़कयिों **को जोखमि उठाकर खतरनाक इलाकों को पार कर या मीलों दूर स्थति अच्छी सुवधिा की प्राप्त हितु यात्रा कर खेलों में सम्मलिति होने में असमर्थ बनाता है।**
- कोई सुरक्षति वकिल्प न होने के कारण अन्य परवािरों के साथ कारपूलगि जैसी परस्थितियि**लड़की के पास परवािर के साथ घर पर रहने के अलावा अन्य कोई वकिल्प नहीं होता है।**
  - उदाहरण के लयि मणपिुर खेल पावरहाउस के लयि जाना जाता है,**कतिु 48% महलिा एथलीट अभ्यास स्थल तक पहुँचने हेतु 10 कमिी. से अधकि** की यात्रा करती हैं।

- **सामाजकि दृष्टकिोण और वरूपिण:**
  - हाल की प्रगतकि बावजूद **महलिा एथलीटों के साथ वास्तवकि या कथति यौन अभवनि्यास और लगि पहचान के आधार पर भेदभाव बना हुआ है।**
  - खेल में लड़कयिों को प्रारंभकि स्थति मिं **धमकी, सामाजकि अलगाव, नकारात्मक प्रदर्शन मूल्यांकन के कारण नुकसान का अनुभव हो सकता है।**
  - कशिोरावस्था के दौरान **"समलैंगकि" टैग का डर सामाजकि रूप से कमज़ोर कई लड़कयिों को खेल से बाहर करने हेतु पर्याप्त है।**
- **गुणवत्तापूरण प्रशकि्षण की कमी:**
  - लड़कयिों को लड़को जतिनी बेहतर सुवधिाएँ नहीं प्राप्त हैं और खेलने का कोई इष्टतम समय नहीं नर्धिारति कयिा जा सकता है।
  - प्रशकि्षति एवं गुणवत्तायुक्त कोच **की अनुपस्थति, या कोच उन लड़कों के प्रशकि्षण पर अधकि ध्यान केंद्रति कर सकते हैं,** जनिके पास प्रशकि्षण हेतु अधकि धन है।
  - **लड़कों के समान लड़कयिों को कई कार्यक्रमों के लयि धन नहीं मलिता है,** जसिसे वकिास करने और खेल का आनंद लेने की उनकी क्षमता सीमति हो जाती है। संक्षेप में खेल अब "आनंददायक" नहीं हैं।
- **सकारात्मक रोल मॉडल की कमी:**
  - वर्तमान में लड़कयिों द्वारा **सशक्त महलिा एथलीटों को रोल मॉडल मानने के स्थान पर उनकी बाह्य सुंदरता पर अधकि ध्यान दयिा जाना।**
  - सहकर्मी का दबाव उस स्थति में **कसिी भी उम्र की लड़कयिों के लयि मुश्कलि हो सकता है;** जब उस दबाव का मुकाबला खेल और स्वस्थ शारीरकि गतविधि मिं भाग लेने के लयि सशक्त प्रोत्साहन के साथ नहीं कयिा जाता है, परणािमतः यह लड़कयिों द्वारा खेल को पूरी तरह से छोड़ने का कारण बन सकता है।
- **सीमति मीडयिा कवरेज:**
  - महलिा खेलों को अक्सर **मीडयिा में कम दखिाया जाता है,** जसिसे महलिा एथलीटों के लयि पहचान और प्रायोजन के अवसर प्राप्त करना कठनि हो सकता है।
- **गर्भावस्था और मातृत्व:**
  - महलिा एथलीटों को अक्सर **मातृत्व और खेल कॅरयिर** के बीच संतुलन स्थापति करनेमें चुनौतयिों का सामना करना पड़ता है।
  - यह **महलिा एथलीटों के प्रशकि्षण और प्रतस्पिर्द्धा के अवसरों को प्रभावति** कर सकता है।

खेलों में अधकि महलिा भागीदारी का महत्त्व:

- **शारीरकि और मानसकि स्वास्थ्य:**
  - **खेल पुरुष और महलिा दोनों के शारीरकि एवं मानसकि स्वास्थ्य पर** सकारात्मक प्रभाव डालते हैं।
  - जो लड़कयिाँ अपनी कशिोरावस्था और शुरुआती वयस्कता के दौरान खेल में भाग लेती हैं, उनके जीवन में**स्तन कैंसर होने की संभावना 20% कम हो जाती है।**
- **लैंगकि समानता:**
  - खेलों में महलिाओं के लयि समान अवसर और संसाधन प्रदान कर**हम उन बाधाओं और रूढ़यिों को तोड़ने में मदद कर सकते हैं जो जीवन के अन्य क्षेत्रों में महलिाओं की क्षमता व भागीदारी को सीमति करते हैं।**
    - खेल अपने बुनयिादी रूप में **संतुलति भागीदारी को प्रोत्साहति करता है** और **इसमें लैंगकि समानता को बढ़ावा देने की क्षमता है,** SDG लक्ष्य संख्या 5 के अंतर्गत भी लैंगकि समानता प्राप्त करने और सभी को महलिाओं तथा लड़कयिों को सशक्त बनाने की बात की गई है।
- **आर्थकि सशक्तीकरण:**
  - खेलों में भाग लेने वाली महलिाओं को अक्सर शकि्षा और रोज़गार के अधकि अवसर मलिते हैं जो आर्थकि सशक्तीकरण की दशिा में अहम कदम हो सकता है।
- **सामाजकि संदर्भों में सुधार:**
  - खेलों में महलिाओं की भागीदारी महलिाओं और **उनकी क्षमताओं के प्रतसिामाजकि दृष्टकिोण को बदलने में भी मदद कर सकती है।**
  - खेलों में महलिाओं की उत्कृष्टता, **अन्य महलिाओं के लयि प्रेरणा का स्रोत हो सकती है** और साथ ही महलिाओं के प्रतरिूढ़विादतिा को चुनौती दी जा सकती है।
- **प्रतनिधित्वि:**
  - खेलों में महलिाओं की भागीदारी, अन्य महलिाओं के लयि**कोचगि और प्रशासन** सहति नेतृत्व संबंधी भूमकिाओं में **बेहतर प्रतनिधित्वि प्रदान करने में मदद कर सकती है।**
  - यह खेल को कॅरयिर के रूप में अपनाने के लयि युवा लड़कयिों के लयि एक प्रेरणा के रूप में भी काम कर सकता है।
- **समुदाय नरि्माण:**
  - खेल के माध्यम से लोगों को एकजुट कयिा जा सकता है और यह समाज के भीतर वभिनि्न समूहों के बीच अधकि समझ एवं सम्मान को बढ़ावा दे सकता है।

- **महिलाओं के बीच खेलों की अधिक भागीदारी को बढ़ावा देकर, हम मज़बूत और अधिक समावेशी समुदायों के निर्माण में मदद कर सकते हैं।**

यौन उत्पीड़न के लिये सुरक्षा उपाय:

- **कार्यस्थल पर महिलाओं का यौन उत्पीड़न (रोकथाम, निषेध और निवारण) अधिनियम, 2013**
- **यौन उत्पीड़न से महिलाओं का संरक्षण (POSH) अधिनियम, 2013**
- **शी-बॉक्स**
- **राष्ट्रीय महिला आयोग (NCW)**
- **यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण अधिनियम, 2012 (POCSO अधिनियम)**

आगे की राह

- **भारत** में **सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टिकोण के कारण** खेल में महिलाओं की भागीदारी परंपरागत रूप से कम रही है। हालाँकि हाल के वर्षों में खेलों में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा देने और उन्हें प्रोत्साहित करने के प्रयास किये गए हैं, जैसे कि **महिला एथलीटों के लिये वित्त एवं संसाधन में वृद्धि करने हेतु नीतियों का कार्यान्वयन,** छोटी उम्र से ही लड़कियों को खेलों में भाग लेने के लिये प्रोत्साहित करने के लिये कार्यक्रमों का निर्माण।
- इन प्रयासों के बावजूद भारत में **खेल भागीदारी और प्रतिनिधित्व में लैंगिक समानता हासिल करने के मामले में अभी एक लंबा रास्ता तय करना शेष है।**
- भारत में खेल विकास की प्रक्रिया में हैं। विकास की इस दर को तेज़ करने के लिये समग्र दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता होगी **बुनियादी ढाँचे के विकास, खेल प्रतिभाओं की पहचान करने, नियमित खेल का आयोजन करने और ज़मीनी स्तर पर जागरूकता पैदा करने के प्रयासों की आवश्यकता है।**

स्रोत: द हिंदू

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/issues-faced-by-females-in-sports